

अदृश्य सिद्धि महामंत्र

ऐं ह्रीं क्लीं हां ह्रीं हूं जय अदृश्य सिद्धि देव्य त्रिदेशमणि-
 मुकुट कोटि संधितचरणारविन्दे गायत्रि सावित्रि सरस्वति
 महाधिक्तामरणमहिषासुरधूम्रलोचनचण्डमुण्ड रक्तबीज
 शुभ्र दैत्य निष्कण्टके, कालरात्रि महामाये, शिवे, नित्ये, इन्द्राग्नि
 यम निऋति वरुण वायु लोमेशान प्रधान शक्ति भूते ब्रह्म विष्णु
 शिवस्तुते त्रिगुवन धराधारे, ज्येष्ठे कदे, सौमि, अंबिके, ब्राह्मि
 मोहेश्वरि, कौमारि, वैष्णवि, शक्तिनि, वाराहि, इन्द्राणि, चामुण्डे
 शिवइति, महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्ववेषे, नादमध्यस्थिते
 महाग्रे विषादेण कणाफणि घटित मुकुट कटकादि, रत्न
 महाज्वाला मय पद बाहु, कण्ठो, तमांगे, मालां कुले, मृगमहि-
 वोपरि गन्धर्व विद्याधराशयिते, नवरत्न निधि कोशे,
 तत्त्व स्वरूपे, वाक्प्राणि, पाद, पायूपरन्धात्मिके, शब्दस्वरूपे
 रूप स्पर्श रस गन्धादि स्वरूपं, त्वक् चक्षु, श्रोत्र, जिह्वा,
 घ्राण, महाबुद्धिरिषते, ओंकार ऐंकार ह्रींकार क्लींकार
 हस्ते !

आं क्लीं आग्नेय नयन क्षेत्रे प्रवेशय प्रवेशय, डां शीलय
 शैलय, ड्री सुकुमारय सुकुमारय श्रीं सर्व प्रवेशय प्रवेशय
 भूमि कार्याणि साधय साधय स्वाहा ।